● *दीये जलाना...*

धन और समृद्धि का आशीर्वाद

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, भारतीय लोगों की सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वासों की विविधता ने बहुत से मेलों और उत्सवों को बनाया है। दिवाली के त्योहार पर अपने घरों और रास्तों के सभी ओर दीयों को जलाने की परंपरा है। पूरे वर्ष घर में स्वास्थ्य, धन, बुद्धिमत्ता, शान्ति और समृद्धि लाने के लिए घरों को दीयों और मोमबत्ती के प्रकाश से प्रकाशित करने की रस्म है। घर की प्रत्येक जगह से अंधकार को हटाकर घर में देवी लक्ष्मी का स्वागत करने की भी रस्म है। सभी जगह जलता हुआ प्रकाश अंधकार को हटाने के प्रतीक के साथ अपनी आत्मा से बुराई को हटाने का भी प्रतीक है। लोग पूजा करके और दीये जलाकर धन और समृद्धि का आशीर्वाद लेते हैं।

हर साल हिन्दुओं द्वारा मनाया जाने वाला दिवाली का उत्सव भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के उनके राज्य में 14 वर्ष बाद वापस आने से जुड़ा हुआ है। अयोध्या के लोगों ने अपने राजा का स्वागत

मिट्टी के दीये जलाकर किया था। भगवान राम ने रावण को हराया था इसलिए लोग इसे अच्छाई की बुराई के ऊपर विजय के प्रतीक के रूप में मनाते है।

दिवाली के दिव्य चरित्र के अनुसार, दिवाली का पांच दिन का समारोह अलग-अलग महत्वों को दर्शाता है। दिवाली का पहला दिन, धनतेरस हिन्दुओं के नए वित्तीय वर्ष के प्रारम्भ को दर्शाता है। दिवाली का दूसरा दिन छोटी दिवाली या नरक चतुर्दशी के नाम से जाना जाता है जो भगवान कृष्ण की राक्षस नरकासुर पर जीत के रूप में जाना जाता है।

दिवाली का तीसरा दिन मुख्य दिवाली के नाम से जाना जाता है जो देवी लक्ष्मी की पूजा करके देवी लक्ष्मी के जन्म दिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। दिवाली का चौथा दिन बली प्रतिप्रदा या गोर्वधन पूजा के नाम से जाना जाता है जो भगवान विष्णु की राक्षस राजा बली पर विजय के साथ-साथ भगवान कृष्ण की घमण्डी इन्द्र के ऊपर विजय के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। दिवाली का पांचवां और अन्तिम दिन यम द्वितीया या भाई दूज के नाम से जाना जाता है जो हिन्दूओं में भाई-बहनों के रिश्ते और जिम्मेदारियों को मजबूती प्रदान करता है।

● *अन्नकूट...*

गोवर्धन पूजा...

दिवाली कोई एक दिवसीय त्यौहार नहीं है बल्कि पांच दिनों तक चलने वाला पर्व है। जिसके चौथे दिन होती है गोवर्धन पूजा। इसे अन्नकूट पर्व के नाम से भी जाना जाता है। दीवाली से अगले दिन मनाया जाने वाला यह पर्व इस बार 15 नवंबर को है। हर साल यह पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को होता है। जिसमें गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत की प्रतिमा बनाकर पूजा की जाती है। इस पर्व में गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत ही नहीं बल्कि गाय का चित्र बनाया जाता है व संध्याकाल में इसकी विधि विधान से शुभ मुहूर्त में पूजा की जाती है।

- प्रात: काल शरीर पर तेल मलकर स्नान करें।
- घर के मुख्य द्वार पर गाय के गोबर से गोवर्धन की आकृति बनाएं।
- गोबर का गोवर्धन पर्वत बनाएं, पास में ग्वाल बाल, पेड़ पौधों की आकृति बनाएं।
- मध्य में भगवान कृष्ण की मूर्ति रख दें।
- इसके बाद भगवान कृष्ण, ग्वाल-बाल और गोवर्धन पर्वत का षोडशोपचार पूजन करें।
- पकवान और पंचामृत का भोग लगाएं।
- गोवर्धन पूजा की कथा सुनें, प्रसाद वितरण करें।

गोवर्धन पूजा का शुभ मुहूर्त

इस बार गोवर्धन पूजा का शुभ मुहूर्त शाम 03.17 बजे से शाम 5:24 बजे तक है. इस दौरान गोवर्धन व गाय की विशेष रूप से पूजा की जाती है।

गोवर्धन पूजा की कथा: आखिर गोवर्धन पूजा क्यों की जाती है इससे संबंधित कथा भी पुराणों में मिलती है जिसके मुताबिक भगवान श्रीकृष्ण ने जब लोगों से इंद्र की पूजा की बजाय गोवर्धन पर्वत की पूजा करने को कहा तब इंद्रदेव इससे क्रोधित हो गए। इसे अपना अपमान समझकर इंद्र ने ब्रजवासियों पर जोरदार बारिश कर दी। और कई दिनों तक बारिश का सिलसिला जारी रहा। नतीजा लोगों ने श्री कृष्ण से मदद की गुहार लगाई। तब श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठाया था और सभी ब्रजवासियों को उसके नीचे खड़ा कर सभी की रक्षा की थी। उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि थी। आज भी उसी के प्रतीक रूप में यह त्योहार मनाया जाता है।

जब भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगली पर उठाया तो इसे देख इंद्रदेव का अभिमान चूर हो गया था। और तब उन्हें अपनी भूल पर पछतावा हुआ। और कृष्ण जी से क्षमा याचना की थी। इस दिन केवल गाय के गोबर से बने गोवर्धन पर्वत की ही नहीं बल्कि गाय, बैल, बछड़ों की भी पूजा की जाती है। शास्त्रों की माने तो इस दिन गाय की पूजा करने से सभी तरह के पापों से मुक्ति मिल जाती है।

हर साल इस त्योहार को लोग बहुत ही खुशी और जोश के साथ मनाते हैं। हम अपने हर्षोल्लास और खुशी के वजह से पर्यावरण को ज्यादा नुकसान पहुंचाते है,

पटाखे, प्लास्टिक, केमिकल युक्त चीजें आदि ज्यादा इस्तेमाल कर हमनें पर्यावरण के लिए खतरनाक बना दिया है जिसकी वजह से वायु और ध्वनी प्रदूषण का स्तर हर साल बढ़ता जा रहा है...

ईको फ्रैंडली दिवाली...

दिवाली को दियों ओर रोशनी का त्योहार कहा जाता है। हर साल इस त्योहार को लोग बहुत ही खुशी और जोश के साथ मनाते हैं। हम अपने हर्षोल्लास और खुशी के वजह से पर्यावरण को ज्यादा नुकसान पहुंचाते है, पटाखे, प्लास्टिक, केमिकल युक्त चीजें आदि ज्यादा इस्तेमाल कर हमनें पर्यावरण के लिए खतरनाक बना दिया है जिसकी वजह से वायु और ध्वनी प्रदूषण का स्तर हर साल बढ़ता जा रहा है। इसके अलावा बम और पटाखों में इस्तेमाल होने वाले केमिकल्स की वजह से वातावरण में मौजूद लाखों सूक्ष्म जीव-जंतु का नाश हो जाता है।

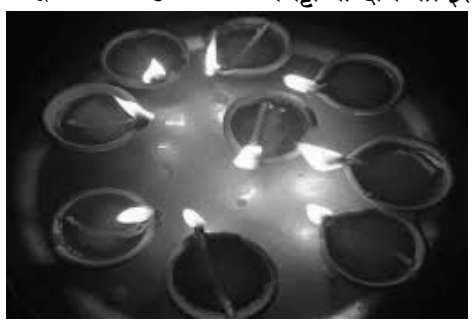

पर्यावरण और सेहत की सलामती के लिए हमें ईको-फ्रैंडली की तरफ कदम बढ़ाना चाहिए। हमारे द्वारा की गई छोटी-छोटी पहल से हम वातावरण को सुरक्षित रख सकते हैं। आइए जानते है कि कैसे हम ईको-फ्रैंडली दीवाली सेलिब्रेट करके वातावरण को दूषित होने से बचा सकते हैं।

● **पटाखों से दूरी:** जी हां, सबसे पहले तो पटाखों से दूरी बनाएं। ये चीजें कुछ देर का मजा तो दे सकती हैं लेकिन पर्यावरण को काफी ज्यादा नुकसान पहुंचा देती हैं जिसके ठीक होने में लंबा समय लग जाता है। पटाखों से न सिर्फ वायु प्रदूषण बल्कि ध्वनि प्रदूषण भी फैलता है। इतना ही नहीं इससे खासतौर से बुजुर्गों और बच्चों की सेहत को भी काफी नुकसान पहुंचता है।

● **केमिकल रंगोली से दूरी:** आमतौर पर बाजार में केमिकल युक्त रंगोली के कलर्स मिलते हैं। इसकी जगह नैचुरल कलर्स खरीदें। ये थोड़े महंगे जरूर पड़ेंगे लेकिन ये पर्यावरण और आपकी सेहत के लिहाज से सबसे बेहतर हैं।

● **प्लास्टिक के फूल:** भले ही दिखने में अट्रेक्टिव लगते हैं और सस्ते में आते है लेकिन बेहतर ऑप्शन नैचुरल फूल ही हैं। सबसे बड़ा फायदा यह है कि ये फूल बायॉडिग्रेडेबल होते हैं जो किसी भी तरह से पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाते। वहीं प्लास्टिक के फूलों को नष्ट करना मुश्किल होता है।

● **मिट्टी के दीये का इस्तेमाल:** इलेक्ट्रिक लाइट्स के ज्यादा इस्तेमाल से बचें और इसकी जगह मिट्टी के दीयों का इस्तेमाल करें। मिट्टी के दीयों से न सिर्फ इलेक्ट्रिसिटी बचाने में मदद मिलती है बल्कि इससे इलेक्ट्रिसिटी जनरेट करने में लगने वाले नैचरल सोर्सेज की कम खपत में भी आप सहयोग कर सकेंगे

● **डेकोरेशन में ईको-फ्रैंडली चीजों का इस्तेमाल:** डेकोरेशन के लिए भी मार्केट में ज्यादातर प्लास्टिक या पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले मटेरियल से बनी चीजें मिलती हैं। इसकी जगह आप ईको-फ्रैंडली मटेरियल जैसे पेपर क्राफ्ट, बांस, मड आदि से बनी चीजों का इस्तेमाल करें।

● *दिवाली की रात...*

करें ये उपाय...

दिवाली की रात सभी भक्त महालक्ष्मी और गणपति का पूजन करते हैं और उनके आगमन के लिए घर में दीप जलाए जाते हैं। दिवाली की रात आर्थिक समृद्धि और धन धान्य के लिहाज से उपयोगी होती है। चलिए जानते हैं कि इस रात्रि ऐसा क्या करें जिससे आपकी किस्मत भी चमक उठें। दिवाली में शुभ मुहूर्त के दौरान नारियल को लाल चमकीले कपड़े में बांधकर मां लक्ष्मी को चढ़ाते हुए पूजन करें। पूजन के पश्चात नारियल को अपने धन स्थान पर रखें। इस उपाय को करने से मां लक्ष्मी आपसे प्रसन्न होंगी और हमेशा उनकी कृपा आप पर बनी रहेगी। दिवाली के दिन किसी भी शुभ मुहूर्त में तीन पीली कौड़ी, तीन कमलगट्टे और एक सुपारी किसी लाल कपड़े में बांध कर मां लक्ष्मी के चरणों में अर्पित करें और पूजन पश्चात सभी चीजों को अपनी तिजोरी में रख दें। इसके बाद प्रत्येक शुक्रवार को इसमें धूप व दीप प्रज्जवलित करें और पूरी श्रद्धा के साथ करने पर इस उपाय से आपको मां लक्ष्मी का आशीर्वाद प्राप्त होगा और आपकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

● *पूजा में सावधानी...*

जो लोग दिवाली के दिन मां लक्ष्मी की पूजा करते हैं, उनको साल भर धन की कमी नहीं होती है, लेकिन कई बार मां की पूजा में भूलवश भी हुई गलत चीजों का प्रयोग आशीर्वाद की जगह पाप का भागी बना देता है। तुलसी को विष्णु प्रिय कहा जाता है और भगवान विष्णु के शालिग्राम स्वरूप से उनका विवाह हुआ है। इस नाते वह देवी लक्ष्मी की सौतन हैं। इसलिए देवी लक्ष्मी को कुछ भी अर्पित करते समय उसमें तुलसी और तुलसी मंजरी न डालें। ऐसा करने से लक्ष्मी मां नाराज हो जाती हैं। लक्ष्मी पूजा करते समय कोशिश करें कि दीपक की ज्योत लाल रंग की हो।